B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

इमैनुअल कान्ट Immanual Kant (1724-1804)

22 अप्रैल, 1724 को पूर्वी प्रशिया (रूस) के कोनिग्सबर्ग (Konigsberg) में जन्मे इमैनुअल काण्ट 18 वीं शताब्दी के जर्मन भूगोल वेत्ताओं में सबसे अन्तिम परन्तु सबसे महत्वपूर्ण भूगोल वेत्ता था। वह प्रथम जर्मन विद्वान था जिसने भूगोल को दार्शनिक आधार प्रदान किया। इसलिए उसको भूगोल का दार्शनिक संस्थापक (Philosophical founder of Geography) कहा जाता है। वह चिन्तन प्रधान भूगोलवेत्ता था, उसके द्वारा रचित ग्रन्थ, लेख व अनुभवों पर आधारित थे। इसलिए उसे आराम कुर्सी भूगोल वेत्ता (Arm Chair Geographer) कहा जाता है। उसकी दिलचस्पी प्राकृतिक व भौतिक भूगोल में रही। उसने भूगोल तथा खगोल विज्ञान को तत्कालीन ईसाई धर्म के अन्धविश्वास तंत्र से मुक्त कराया और इन विषयों को नयी दिशा दी। इसी कारण से भूगोल के विकास संबंधी इतिहास को दो मुख्य युगों में बाँटा जाता है— काण्ट से पहले का युग तथा काण्ट के बाद का युग। उसने 1756 से 1790 तक कोनिग्सबर्ग विश्व विद्यालय में भौतिक भूगोल का प्राध्यापन किया। यद्यपि भूगोल में उसका कार्य सीमित था तथापि उसे भौगोलिक चिन्तन के जर्मन स्कूल का संस्थापक माना जाता है। क्योंकि उसने भूगोल का अध्ययन करने का क्रमिक ढंग बतलाया था। 1755 में आपने (i) General Natural History and (ii) Theory of the Heavens लिखी। उनकी कृतियाँ

(a) Critique of Pure region. (1781)

(b) Critique of judgement (1790) में कई भौगोलिक सन्दर्भ मिलते हैं।

1798 में आपने Anthropology from Pragmatic point of View विषय पर लेख लिखे जिसमें विश्व की कई जातियों एवं जनजातियों का भौगोलिक वर्णन दिया गया है।

उनकी मूल रुचि भौतिक भूगोल में थी। उनके मतानुसार केवल भौतिक भूगोल ही प्रकृति की एक सामान्य रूप रेखा प्रस्तुत कर सकता है। यह केवल इतिहास का ही आधार नहीं है बल्कि भूगोल की अन्य शाखाओं को भी आधार प्रदान करता है। काण्ट ने भूगोल तथा खगोल विज्ञान को दो स्वतन्त्र विषयों का स्थान दिया और दोनों में अनुसंधान किया। भूगोल के अध्ययन में काण्ट पृथ्वी को मानवीय गृह के रूप में ही विचारता था।

(आधुनिक भौगोलिक चिन्तन का चिरसम्मत (शास्त्रीय) काल)
"इमैनुअल काण्ट" (Classical Period) (V-K)

भूगोल को देन ⇒ (Contribution to geography)

1. महान दार्शनिक के रूप में - (As a great Philosopher) - उसका भौगोलिक चिन्तन आनुभविक था, वह प्रकृति से प्रेम करने वाला था। वह प्रत्येक घटना का संबंध प्रकृति के साथ जोड़ा।

वह इतिहास का शिक्षक था, उसके अनुसार जो घटनाएं समय के साथ घटित होती हैं वह प्रकृति से प्रभावित होती है। उसके अनुसार इतिहास कुछ भी नहीं बल्कि निरन्तर भूगोल है।

2. महान चिंतक के रूप में - (As a great thinker) - उसने दर्शन और चिन्तन के आधार पर ज्ञान प्राप्ति के दो साधन बताये हैं।

(i) शुद्ध तर्क (Pure reason) (ii) ज्ञानेन्द्रियां (Senses)

तर्क अनुभव से प्राप्त होता है तथा मानव को भावुकता की ओर ले जाता है। प्रकृति के समीप जाकर सच्चा ज्ञान प्राप्त करता है।

ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ज्ञान की प्राप्ति दो विधियों से होती है-

(i) बाह्य इन्द्रियों (outer senses) द्वारा ज्ञान की प्राप्ति।
(ii) अन्तर्मन (Inner senses) द्वारा ज्ञान की प्राप्ति।

दोनों मिलकर मनुष्य को संसार का समस्त आनुभविक ज्ञान (Empirical knowledge) उपलब्ध कराते हैं।

आन्तरिक इन्द्रियों द्वारा विश्व की परिकल्पना को आत्मा (Soul) (Man) तथा बाह्य इन्द्रियों द्वारा विश्व की परिकल्पना को प्रकृति (Nature) कहा गया है।

(3) आनुभविक ज्ञान - (Empirical knowledge) काण्ट ने विभिन्न इन्द्रियग्राह्य विषयों का क्रमबद्ध अध्ययन करने के लिए दो विधियों का सुझाव दिया।

(i) प्रकृति के अनुसार (तर्कसंगत) वर्गीकरण (विचार एवं विशेषधारणाएं)
(ii) समय और स्थान के अनुसार (भौतिक) वर्गीकरण।

तर्कसंगत वर्गीकरण क्रमबद्ध विज्ञानों की नींव डालता है। - जैसे - पशुओं का अध्ययन (जीवविज्ञान), चट्टानों का अध्ययन - भूविज्ञान।

भौतिक वर्गीकरण इतिहास तथा भूगोल को आधार प्रदान करता है। यह उन वस्तुओं को एकत्रित करता है जो एक ही समय तथा एक ही स्थल से सम्बन्धित हों।

(4) (इतिहास एवं भूगोल में अन्तर) काण्ट के अनुसार इतिहास तथा भूगोल में 'स्थान' तथा 'समय' का अन्तर है। इतिहास में उन घटनाओं का अध्ययन करते हैं जो 'समय' के सन्दर्भ में एक दूसरे के बाद घटती हैं। भूगोल में उन तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जो 'स्थान' के सन्दर्भ में घटती हैं।

⇒ इन्द्रियग्राह्य (Phenomena) का अध्ययन स्थान के सन्दर्भ में भूगोल तथा समय के सन्दर्भ में इतिहास है। (Study of Phenomea in terms of space is geography and in time is history)

⇒ इतिहास कथनात्मक तथा भूगोल वर्णनात्मक है। (History is narrative and geography is descriptive)

⇒ काण्ट ने यह भी प्रश्न उठाया कि पहले भूगोल या इतिहास" उसके अनुसार भूगोल सदा ही विद्यमान रहा और यह इतिहास की उपसंरचना है। यदि आदिकालीन इतिहास है तो आदिकालीन भूगोल भी अवश्य होना चाहिए।

(5) समय और स्थान की व्याख्या (Explaination of time and space)

इतिहास 'समय' है तथा भूगोल 'स्थान' है। स्थान और समय दोनों को सन्दर्भ की शक्ति के रूप में देखा जाता है।

(6) प्रकृति एवं मानव का परस्पर सम्बन्ध – (Nature & Human - Inter-Relation)

काण्ट ने यद्यपि मानव की महत्ता को स्वीकार किया लेकिन प्रकृति के प्रभाव को सर्वोपरि माना। उसने मानवीय एवं प्राकृतिक घटनाओं की अन्तः क्रियाओं को स्वीकार करते हुए मानव को भूतल पर परिवर्तन लाने वाला महत्वपूर्ण कारक माना। उसने मानव स्वभाव व शारीरिक रचना पर प्रकृति के प्रभाव को सर्वोपरि माना।

(7) भूगोल की शाखाएं (Branches of Geography) यद्यपि काण्ट के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु भौतिक भूगोल ही रहा तथापि उसने भूगोल की अन्य शाखाओं की ओर भी ध्यान दिया। उसने 1757 में प्रकाशित Ankundingung में बताया कि पृथ्वी का अध्ययन पाँच विधियों से किया जा सकता है।

(i) गणितीय भूगोल (ii) नैतिक भूगोल (Moral Geog.) (iii) राजनीतिक भूगोल (iv) वाणिज्य भूगोल (v) धर्मशास्त्रीय भूगोल।